केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पाम्पोर

रेशमकीट पालन अपनाने के लिए किससे संपर्क करें, यह सभी किसानों द्वारा पूछा जाने वाला सबसे आम प्रश्न है?

राज्य के राज्य रेशम उत्पादन विभाग या विशेष क्षेत्र में इसकी उप–इकाइयों से संपर्क करें, राज्य या क्षेत्र में स्थित सी.एस.बी. इकाइयों से संपर्क करें।

एक किसान कितनी लेयरिंग कर सकता है?

ब्रशिंग क्षमता किसान के पास उपलब्ध पत्ती एवं पालन सुविधाओं की उपलब्धता पर निर्भर करती है।

एक औंस अंडे देने के लिए पत्ती की आवश्यकता?

लोकप्रिय संकर के लिए एक औंस रोग मुक्त अंडे (100 डीएफएल) (60,000 लार्वा) के पालन के लिए पत्ती की आवश्यकता लगभग 1400-1600 किलोग्राम है।

पालन गृह को कीटाणुरहित करने के लिए किस कीटाणुनाशक का उपयोग किया जाता है?

सेनिटेक, सेरीक्लोर और ब्लीचिंग पाउडर का इस्तेमाल पालन गृहों को कीटाणुरहित करने के लिए किया जाता है। हालाँकि, चूँकि यह काम सरकारी एजेंसियों द्वारा किया जाता है, इसलिए किसानों को परेशान होने की ज़रूरत नहीं होगी।

पालन गृहों के कीटाणुशोधन के लिए कितनी मात्रा में घोल की आवश्यकता होती है?

कीटाणुशोधन समाधान @ 2.0 लीटर / वर्ग मीटर या 140 मिली / वर्ग फीट

पालन के दौरान कौन से स्वच्छता उपाय अपनाए जाने चाहिए?

पालन–पोषण उपकरणों को उधार लेने से बचें, बिना कीटाणुशोधन के उपकरणों का उपयोग न करें, पालन–पोषण गृह में व्यक्तियों का प्रवेश प्रतिबंधित करें, पालन–पोषण गृह में प्रवेश करने वाले व्यक्तियों को प्रवेश करने से पहले पैरों और हाथों को कीटाणुरहित करना चाहिए, प्रवेश मार्ग पर बुझे हुए चूने में 5% ब्लीचिंग पाउडर छिड़कें, प्रत्येक बिस्तर की सफाई के बाद फर्श को पोंछें।

बीमारियों की रोकथाम के लिए किस बिस्तर कीटाणुनाशक का उपयोग किया जाता है?

आरकेओ, रेशम ज्योति, विजेता, अंकुश आदि का उपयोग बीमारियों की रोकथाम के लिए किया जाता है। बिस्तर कीटाणुनाशक के रूप में विजेता का परीक्षण किया गया और पाया गया कि यह दूसरों की तुलना में सबसे अच्छा परिणाम देता है।

कीटाणुनाशक की कितनी मात्रा की आवश्यकता है?

लगभग 4 किलोग्राम। हालाँकि, चूंकि यह किसानों को मुफ्त में दिया जाता है, इसलिए उन्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं होगी।

लार्वा पर कीटाणुनाशक कब छिड़कें?

प्रत्येक निर्मोचन के बाद कृमियों को पुनः लाने से आधे घंटे पहले तथा बिस्तर की सफाई के बाद 5वें इन्स्टार के चौथे दिन बिस्तर पर कीटाणुनाशक छिड़कना चाहिए।

आदर्श पालन गृह कैसा होना चाहिए?

पालन गृह ऐसा होना चाहिए जहां रेशमकीट पालन के लिए आवश्यक इष्टतम पर्यावरणीय परिस्थितियों को नियंत्रित किया जा सके, जैसे तापमान, आर्द्रता, प्रकाशकाल, वायु प्रवाह आदि।

रेशमकीट पालन के लिए आवश्यक पर्यावरणीय परिस्थितियाँ क्या हैं?

तापमान और आर्द्रता इस प्रकार बनाए रखी जानी चाहिए – III चरण – तापमान – 260C और आर्द्रता 80% IV चरण – तापमान – 24-250C और आर्द्रता 75% V चरण – तापमान – 23-240C और आर्द्रता 70%

रेशमकीट को माउंट करने के लिए किस प्रकार के माउंटेज का उपयोग किया जा सकता है?

माउंटेज के कई प्रकार हैं जैसे रोटरी कार्ड बोर्ड माउंटेज, बांस चंद्राइक, प्लास्टिक कोलैप्सिबल माउंटेज, बॉटल ब्रश माउंटेज, बांस सर्पिल माउंटेज, लेकिन किसान इस उद्देश्य के लिए सूखी घास, पुआल, शहतूत की टहनियाँ आदि का उपयोग करते हैं। ऐसे मामलों में, कोकून कम होता है, दोषपूर्ण कोकून और फ्लॉस अधिक होते हैं, एकल कोकून और शेल का वजन कम होता है।

प्ररोह पालन के क्या लाभ हैं?

50% तक श्रम की बचत, 15% तक पत्ती की बचत, कीटपालन क्यारी में पत्ती के सूखने में कमी, कम क्यारी क्षेत्र की आवश्यकता, संदूषण की कम संभावना, बेहतर वायु संचार आदि।

पालन गृहों में वेंटिलेशन क्यों?

क्रॉस वेंटिलेशन होना चाहिए क्योंकि पालन गृह में CO2 का उच्च प्रतिशत लार्वा के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

भोजन देने की आवृत्ति कितनी होनी चाहिए?

वसंत और शरद ऋतु दोनों मौसमों में बराबर अंतराल पर हर दिन दो बार भोजन देना चाहिए। हालाँकि, मौसम की स्थिति को देखते हुए भोजन की आवृत्ति तय करना वांछनीय है।

प्ररोह पालन विधियों में रेशमकीट पालन के लिए कितनी दूरी आवश्यक है?

एक औंस रेशमकीट पालन के लिए तृतीय चरण के लिए 45-90 वर्ग फुट, चतुर्थ चरण के लिए 90-200 वर्ग फुट तथा पंचम चरण के लिए 200-450 वर्ग फुट स्थान की आवश्यकता होती है।

मोल्ट के दौरान क्या सावधानी बरती जा सकती है?

जहां तक संभव हो, इष्टतम अनुशंसित पर्यावरणीय परिस्थितियां बनाए रखें, पत्ती को सुखाने के लिए क्यारी बिछाएं, पालन क्यारी पर चूने की पतली परत छिड़कें।

स्पिनिंग लार्वा की पहचान कैसे करें?

ये लार्वा कम खाते हैं, नरम हो जाते हैं, मल हल्के भूरे रंग का हो जाता है जिसे उंगलियों से कुचला जा सकता है, त्वचा धीरे–धीरे पारदर्शी हो जाती है, घूमने के लिए जगह की तलाश में इधर–उधर रेंगते हैं, लार्वा अंधेरे क्षेत्रों की ओर चले जाते हैं।

स्पिनिंग लार्वा को कैसे माउंट करें?

पिक अप विधि, स्व–माउंटिंग विधि, जाल विधि, जोबाराई विधि (अंकुरों को हिलाना)।

माउंटिंग के दौरान लार्वा का घनत्व कितना होना चाहिए?

40-50 लार्वा (100 डीएफएल) प्रति वर्ग फीट।

कोकून की कटाई कब करें?

कोकून की कटाई रोपण के 6वें दिन की जानी चाहिए

दोषपूर्ण कोकून क्या हैं?

फ्रेम मुद्रित कोकून, गंदे कोकून, पतले सिरे वाले कोकून, विकृत कोकून, पतले खोल वाले कोकून, पेशाब वाले कोकून, विकृत कोकून दोषपूर्ण कोकून के प्रमुख प्रकार हैं।

एक निर्मोचन से दूसरे निर्मोचन तक का अन्तःकाल लंबा क्यों होता है?

अपर्याप्त आहार के कारण तथा पालन–शय्या में अनुचित तापमान और सापेक्ष आर्द्रता के कारण भी अवधि लम्बी हो सकती है।

कुछ रेशमकीट के लार्वा छोटे आकार के क्यों होते हैं?

बीमारी के अलावा, कुछ लार्वा का आकार बहुत ज़्यादा रोने की वजह से भी छोटा रह सकता है। रेशमकीट के लार्वा को पर्याप्त भोजन न मिलने की वजह से उनका आकार छोटा रह जाता है। इसके अलावा, अगर मूल्ट के बाद कीड़ों को फिर से शुरू करने के दौरान सही प्रक्रिया का पालन नहीं किया जाता है। इसलिए पालन बेड में सभी लार्वा को उस समय फिर से शुरू किया जाना चाहिए जब सभी मूल्ट से बाहर हों और बेड में प्रत्येक स्थान पर कीड़ों को समान मात्रा में पत्ते खिलाए जाएं।

ग्रासरी रोग चौथे मोल्ट के बाद हो रहा है, क्यों?

चौथे मोल्ट के बाद दिखाई देने वाले लक्षण एन.पी.वी. संक्रमण के प्रारंभिक चरण के कारण होते हैं। प्रत्येक रेशम कीट पालन से पहले और बाद में पालन कक्ष को उचित रूप से कीटाणुरहित किया जाना चाहिए और प्रत्येक मोल्ट के बाद बेड कीटाणुनाशकों का उचित उपयोग करना चाहिए, अर्थात विजेथा का उपयोग कीड़ों को फिर से शुरू करने से आधा घंटा पहले करना चाहिए।

शहतूत के रोपण के लिए गड्ढे का आकार कितना होना चाहिए?

शहतूत का पौधा लगाने के लिए गड्ढे का आकार 60x60x60 सेमी होना चाहिए।

पौधरोपण के दौरान आवश्यक एफ.वाई.एम. खुराक क्या है?

रोपण के दौरान FYM की अनुशंसित मात्रा 1.5 से 2 किग्रा/गड्ढा है।

शहतूत की खेती के लिए मिट्टी का पीएच मान कितना होना चाहिए?

शहतूत की खेती के लिए मिट्टी थोड़ी अम्लीय (पीएच 6.2 से 6.8) होनी चाहिए।

कश्मीर में किसानों के बीच कौन सी किस्म लोकप्रिय है?

गोशोरामी कश्मीर के किसानों के बीच लोकप्रिय किस्म है। इस किस्म का मूल स्थान जापान है।

1 क्विंटल शहतूत के फल से कितनी मात्रा में शहतूत के बीज प्राप्त किए जा सकते हैं?

1 क्विंटल शहतूत के फल से लगभग 5 किलोग्राम बीज प्राप्त किया जा सकता है।

फल के उद्देश्य से कश्मीर में शहतूत की सबसे अच्छी और प्रसिद्ध देशी किस्म कौन सी है?

शाहतुल (*मोरस निग्रा*).

खराब जड़ वाली किस्मों को उगाने के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न प्रकार की ग्राफ्टिंग विधियाँ क्या हैं?

खराब जड़ वाली किस्मों को उगाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न प्रकार की ग्राफ्टिंग विधियाँ हैं: (ए) रूट ग्राफ्टिंग (बी) वेज ग्राफ्टिंग (सी) बैग ग्राफ्टिंग

रूट ग्राफ्टिंग क्या है?

रूट ग्राफ्टिंग खराब जड़ वाली शहतूत किस्मों के प्रसार की एक तकनीक है। इस तकनीक में, जिस शहतूत किस्म का प्रसार किया जाना है, उसका उपयोग कलम के रूप में किया जाता है और अंकुर की जड़ को स्टॉक के रूप में उपयोग किया जाता है।

वेज ग्राफ्टिंग क्या है?

वेज ग्राफ्टिंग खराब जड़ वाली शहतूत किस्मों के प्रसार की एक तकनीक है। इस तकनीक में, जिस शहतूत किस्म का प्रसार किया जाना है, उसे कलम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है और अच्छी जड़ें देने वाले पौधों को स्टॉक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

उत्तर भारत के उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की लोकप्रिय किस्में कौन सी हैं?

एस146, एस1635, टीआर10 और एस

बैग ग्राफ्टिंग क्या है?

बैग ग्राफ्टिंग खराब जड़ वाली शहतूत किस्मों के प्रसार के लिए एक तकनीक है। इस तकनीक में, जिस शहतूत किस्म का प्रसार किया जाना है, उसका उपयोग कलम के रूप में किया जाता है और अच्छी जड़ वाली किस्मों के

तने की कटिंग को स्टॉक के रूप में उपयोग किया जाता है।

कश्मीर में खराब जड़ वाली शहतूत किस्मों को उगाने के लिए व्यापक रूप से स्वीकृत तकनीक कौन सी है?

कश्मीर में खराब जड़ वाली शहतूत किस्मों को उगाने के लिए बैग ग्राफ्टिंग व्यापक रूप से स्वीकृत ग्राफ्टिंग विधि है, क्योंकि यह त्वरित है और जीवित रहने की दर अधिक है।

कश्मीर में शहतूत के पौधे लगाने के लिए सबसे उपयुक्त मौसम कौन सा है?

कश्मीर में शहतूत के पौधे लगाने के लिए सबसे उपयुक्त मौसम मार्च का पहला सप्ताह और अक्टूबर है।

रोपाई से पहले शहतूत के पौधे को कितने समय तक जमीन से बाहर रखा जा सकता है?

रोपाई के उद्देश्य से शहतूत के पौधों को उखाड़ते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पौधे की जड़ प्रणाली से चिपकी मिट्टी को कोई नुकसान न पहुंचे तथा उन्हें पहले से खोदे गए गड्ढों में तुरंत रोपना भी आवश्यक है।

उच्च उपज देने वाली शहतूत की कौन सी किस्में हैं जिन्हें कश्मीर की परिस्थितियों में पेड़ के रूप में उगाया जा सकता है?

गोशोरामी, केएनजी और टीआर–10 शहतूत की वे किस्में हैं जिन्हें पेड़ों के रूप में उगाया जा सकता है जिससे उच्च उपज के अलावा गुणवत्तायुक्त पत्ते भी प्राप्त होते हैं।

शहतूत के पौधे कहां से उपलब्ध होंगे?

उच्च उपज देने वाली शहतूत किस्मों के पौधे डीओएस, फार्मों के अलावा सीएसआरएंडटीआई, पंपोर और एसकेयूएएसटी, मीरगुंड, कश्मीर में उपलब्ध हैं।

एक कनाल शहतूत बागान से कितने डीएफएल रेशमकीट पाले जा सकते हैं?

एक कनाल शहतूत बागान से दो मौसमों में 100 डीएफएल रेशमकीट पाले जा सकते हैं।

एक वर्ष में शहतूत के पेड़ की कितनी बार छंटाई की जाती है?

शीतोष्ण जलवायु में जून के प्रथम सप्ताह में एक बार मुकुट की ऊंचाई पर तथा उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में दो बार छंटाई (जून में मुकुट स्तर पर तथा दिसंबर के मध्य में मुकुट से 03 फीट ऊपर छंटाई)।

क्या रसोईघर के बगीचे में पौधे उगाये जा सकते हैं?

हां, पौधे रसोईघर के बगीचे में भी उगाए जा सकते हैं, लेकिन अंतर–संस्कृति कार्यों के साथ–साथ अनुशंसित उर्वरक का प्रयोग और सिंचाई भी आवश्यक है।

शहतूत के साथ कौन सी अंतरफसलें उगाई जा सकती हैं?

शहतूत के साथ कई अंतर–फसलें उगाई जा सकती हैं। सीएसआरएंडटीआई, पंपोर में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि केसर, मटर, सेम जैसी फसलों को शहतूत के साथ अंतर–फसल के रूप में उगाया जा सकता है, जिससे पत्तियों की गुणवत्ता और उपज पर कोई असर नहीं पड़ता है।

पत्तियों के गुणात्मक उत्पादन के लिए क्या गतिविधियाँ की जानी चाहिए?

अनुशंसित प्रथाओं का पालन करें, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन और एकीकृत रोग, कीट और नाशीजीव प्रबंधन का उपयोग करें।

क्या शहतूत को बीज से उगाया जा सकता है?

हां, लेकिन शहतूत की अनुशंसित जीनोटाइप की कटिंग का उपयोग करके शहतूत उगाना सुविधाजनक है। बेहतर होगा कि नर्सरी में पौधे उगाए जाएं और फिर उन्हें बेहतर तरीके से जीवित रहने के लिए खेत में रोप दिया जाए। झाड़ीदार रोपण के लिए छह महीने पुराने पौधे की सिफारिश की जाती है, जबकि वृक्षारोपण के लिए एक साल पुराने पौधे का उपयोग किया जाना चाहिए।

शहतूत की टहनियों का परिवहन कैसे करें?

शहतूत की टहनियों को दिन के ठंडे घंटों के दौरान ले जाया जाना चाहिए। यदि उन्हें लंबी दूरी तक ले जाना है और 30 मिनट से अधिक समय लगता है, तो उन्हें पत्तियों से नमी के नुकसान को कम करने के लिए गीले बोरी के कपड़े, पॉलीथीन शीट से ढक दिया जाना चाहिए।

शहतूत के पौधों को कैसे संरक्षित करें?

20 किलोग्राम का बंडल बनाएं और इसे ऊर्ध्वाधर स्थिति में रखें क्योंकि ऐसी स्थिति में नमी का नुकसान न्यूनतम होता है

शहतूत के पेड़ कब लगाएं?

उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वृक्षारोपण जुलाई (वर्षा ऋतु), अगस्त और सर्दियों (जनवरी) के दौरान किया जाना चाहिए। हालांकि, समशीतोष्ण परिस्थितियों में यह मार्च के महीने में किया जाता है।